आरम्भ करना... स्वप्न देखना आरम्भ करें

उत्पत्ति की पुस्तक के आरम्भ में परमेश्वर अपनी रची हुई सृष्टि को दुर्व्यवस्था में देखते हैं। हमें यह नहीं बताया गया है कि ऐसा क्यों हुआ तथापि, जो कुछ हुआ था उससे परमेश्वर संतुष्ट नहीं थे, और इससे उन्हें एक उत्तम दिन का स्वप्न देखने का अवसर मिला। कभी न कभी, हम सब के सामने ऐसे समय आते हैं कि हम अपने जीवन में या अपने संसार में कुछ न कुछ परिवर्तित करें। ये समय अवसर उत्पन्न करते हैं कि हम उन क्षणों का भरपूर लाभ उठाएं और अपने भविष्य के लिए एक नया स्वप्न, परमेश्वर का स्वप्न अपना लें।

जब आप अपने जीवन का सर्वेक्षण करते हैं और ऐसे क्षेत्र पाते हैं जिनमें ध्यान देने की आवश्यकता है तो परमेश्वर से प्रेरणा मांगें और स्वप्न देखना आरम्भ करें.......कल्पना करें कि जो कुछ अभी है उसकी अपेक्षा और क्या क्या हो सकता है, और याद रखें कि परमेश्वर के साथ सब कुछ सम्भव है।

आज के लिए प्रार्थना: हे स्वर्गिक पिता, मेरे जीवन के लिए आपके स्वप्नों के द्वारा मुझे प्रेरणा दें और मुझे और अधिक अपने जैसा बना लें। मैंने अपने ऊपर जो सीमाएं लगा रखी हैं उन्हें हटाने में और अपनी सीमा रेखाओं को दोबारा खींचने में मेरी सहायता करें ताकि आपने मुझमें जो सामर्थ डाली है उसे भी मैं शामिल कर सकूँ। मेरी कल्पनाओं को खोलें और मुझे सब डरों से छुटकारा दें।

आज के लिए वचन: भजन 126:1 जब यहोवा सिय्योन से लौटनेवालों को लौटा ले आया, तब हम स्वप्न देखनेवाले से हो गए।

अय्यूब 33:14–16 क्योंकि ईश्वर तो एक क्या वरन दो बार बोलता है, परन्तु लोग उस पर चित्त नहीं लगाते। स्वप्न में, वा रात को दिए हुए दर्शन में, जब मनुष्य घोर निद्रा में पड़े रहते हैं, वा बिछौने पर सोते समय, तब वह मनुष्यों के कान खोलता है, और उनकी शिक्षा पर मुहर लगाता है।

स्वप्न योजना नहीं होता

स्वप्न योजना नहीं होता। उत्पत्ति 1:2 में, जब परमेश्वर ने संसार में अंधकार देखा तो परमेश्वर का आत्मा पृथ्वी पर मण्डराने लगा, और योजना बनाने में उचित समय व्यतीत किया।

हमारे जीवन रेफ्रीजरेटर बनने के लिए तैयार नहीं किए गए हैं कि हम परमेश्वर के पिछले कार्यों को सम्भाल कर रखें, बल्कि इन्क्युबेटर बनने के लिए ताकि परमेश्वर के भविष्य के कार्य को विकसित किया जा सके। इस प्रक्रिया का बेहतर नाम मनन है। यह जानना कि हमें प्रथम कदम में क्या परिवर्तन लाना है। यह जानने के लिए कि यह परिवर्तन कैसे आएगा, एक योजना की आवश्यकता होती है। अपने जीवन के लिए परमेश्वर के स्वप्न देखें और अपने आप को प्रेरित करने के लिए परमेश्वर को समय और अवसर देते हुए योजना बनाना आरम्भ करें। प्रार्थना में अपना स्वप्न निरंतर परमेश्वर के पास ले जाते रहें और वे आपको अगला कदम दर्शाएंगे।

आज के लिए प्रार्थना: हे प्रिय परमेश्वर, मैं अपने जीवन के लिए आपके स्वप्न में सफल होना चाहता हूँ। मुझ में एक योजना तैयार करें और मुझे प्रत्येक आवश्यक कदम दें। मैं अपने विचार आपको सौंपने का चयन करता हूँ और अपना ध्यान आपकी इच्छा और आपके मार्ग पर लगाता हूँ।

आज के लिए वचन: नीतिवचन 3:5–6 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वे तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

यहोशू 1:8 व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाए, इसी में दिन रात ध्यान दिए रहना, इसलिये कि जो कुछ उस में लिखा है उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे; क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सुफल होंगे, और तू प्रभावशाली होगा।

edit copy

स्वप्न की उद्घोषणा करें

उत्पत्ति में, परमेश्वर ने स्वप्न देखा कि अब संसार अंधकार में बिल्कुल नहीं रहेगा। उन्होंने अपने सारे उपायों पर ध्यान दिया और अपनी योजना विकसित की परन्तु यह तब तक वास्तविकता नहीं बन पाई जब तक कि उन्होंने अपना प्रथम कदम नहीं उठाया और कहा, "उजियाला हो जाए"। परमेश्वर ने अपने स्वप्न की उद्घोषणा की और संसार को बता दिया कि अब सब कुछ बदलने वाला है। जब हमें परिवर्तन की आवश्यकता है और हमने परमेश्वर की ओर से प्रेरित योजना को प्राप्त कर लिया है, तो हम अपने विश्वास की उद्घोषणा करते हुए और संसार को यह बताते हुए कि अब सब कुछ बदलने वाला है, उस परिवर्तन का आरम्भ कर सकते हैं।

प्रभु यीशु हमें निर्देश देते हैं कि हम अपने पहाड़ों से विश्वास से बोलें। केवल स्वप्न देखने से या केवल योजना बना लेने मात्र से ही कुछ भी नहीं बदलेगा। परमेश्वर ने ब्रह्माण्ड को आदेश दिया है और उसे आज्ञा दी है कि वह आपके विश्वास की उद्घोषणा का प्रतिउत्तर दे। विश्वास के साथ अपने स्वप्न की उद्घोषणा करना आरम्भ करें।

आज के लिए प्रार्थना: हे प्रिय प्रभु, मेरी जीभ को अपना साधन बना लें और मेरे द्वारा अपनी इच्छा को अस्तित्व में आने के लिए बोलें। मेरे मुख पर एक पहरेदार बैठाएं और मेरे होठों की रखवाली करें। यीशु के नाम में अपनी इच्छा को जीवित करने के लिए मेरे शब्दों को इस्तेमाल करें।

आज के लिए वचन: अय्युब 22:28 जो बात तू ठाने वह तुझ से बन भी पड़ेगी, और तेरे मार्गों पर प्रकाश रहेगा।

भजन 2:7 मैं उस वचन का प्रचार करूँगा...

मरकुस 11:23 मैं तुम से सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे; कि तू उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़, और अपने मन में सन्देह न करे, वरन प्रतीति करे, कि जो कहता हूँ वह हो जाएगा, तो उसके लिये वही होगा।

बुरे निर्णय, गलत निर्णय, और बड़ी गल्तियाँ समस्याएं नहीं हैं बल्कि इस प्रक्रिया का अंग हैं

जीवन बहुत सारे निर्णयों से मिलकर बना है, इनमें से कुछ सही होते हैं, कुछ गलत साबित होते हैं और कुछ तो बहुत मंहगे भी पड़ जाते हैं। परखने के उन समयों में जब हम गलती कर बैठते हैं तो परमेश्वर और कहीं नहीं बल्कि वहीं हमारे साथ होते हैं। जो बात हमें असफलता लग रही हो, हो सकता है कि वह एक ऐसा अवसर हो जिसके द्वारा परमेश्वर हमें कुछ सिखाना चाह रहे हों और हमें अपने जीवन के और अधिक महान समय में ले जा रहे हों।

कभी कभी, जो निर्णय बुरा, गलत या कोई बहुत बड़ी गलती प्रतीत होता है, हो सकता है कि वह समस्या हो ही न जैसा के आप आरम्भ में सोच सकते हैं, बल्कि परमेश्वर की योजना का अंग हो सकता है जो आपको आपके सबसे बड़े दिन के लिए ढाले, प्रशिक्षित करे और बेहतर रूप में तैयार करे। हमें अपनी गल्तियों से सबक सीखने के लिए तत्पर रहना चाहिए और अपेक्षा करनी चाहिए कि परमेश्वर उनका इस्तेमाल किसी न किसी रूप में अपने लाभ के लिए ही करेंगे।

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मैं सब कुछ आपके दृष्टिकोण से देखना चाहता हूँ। मुझे सिखाएं कि मैं उन बातों को लेकर परेशान न हो जाऊँ जिन्हें मैं बदल नहीं सकता। मुझे अनुग्रह दें और मुझे अपनी गल्तियों से सबक सीखने का अवसर दें ताकि मैं आपके लिए और भी अधिक लाभदायक बन सकूँ।

edit copy

आज के लिए वचनः 2 कुरिन्थियों 4:17—18 क्योंकि हमारा पल भर का हलका सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है। और हम तो देखी हुई वस्तुओं को नहीं परन्तु अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं, क्योंकि देखी हुई वस्तुएं थोड़े ही दिन की हैं, परन्तु अनदेखी वस्तुएं सदा बनी रहती हैं।

निर्गमन 1:12 पर ज्यों ज्यों वे उनको दुःख देते गए त्यों त्यों वे बढ़ते और फैलते चले गए; इसलिये वे इस्राएलियों से अत्यन्त डर गए।

रोमियों 8:28 और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।

हम जो सोचते हैं वह इसलिए सोचते हैं, और जो महसूस करते हैं वह इसलिए महसूस करते हैं, और हम जो चाहते हैं वह इसलिए चाहते हैं क्योंकि जो हम प्रतीति करते हैं उस पर सचमुच प्रतीति करते हैं।

हम जो सोचते हैं, जो महसूस करते हैं और जो कुछ चाहते हैं, वह सबकुछ इस पर आधारित है कि हम क्या प्रतीति करते हैं। यह सबकुछ तब ठीक है यदि हम सही बात पर प्रतीति कर रहे हैं। तथापि, कुछ लोग अकारणीय डर, अवास्तविक अपेक्षाओं, बेकार की चिंताओं या बेमतलब की परेशानियों के द्वारा नियंत्रित रहते हैं। अन्य लोग अपने इस विश्वास के कारण अंधकार में हैं कि कोई परमेश्वर है ही नहीं।

हम जो सोचते हैं वह इसलिए सोचते हैं, और जो महसूस करते हैं वह इसलिए महसूस करते हैं, और हम जो चाहते हैं वह इसलिए चाहते हैं क्योंकि जो हम प्रतीति करते हैं उस पर सचमुच प्रतीति करते हैं, चाहे जो हम प्रतीति कर रहे हैं वह सच भी न हो। सत्य की केवल एक ही परख है — परमेश्वर का वचन, बाइबल। परमेश्वर का वचन आपके, आपके जीवन और आपके भविष्य के बारे में क्या कहता है? इसे पता करें और उस पर विश्वास करना आरम्भ करें! इस पर पर्याप्त समय और ध्यान दें और यह आपकी सोच, महूससीकरण और चाहत को बदल डालेगा।

आज के लिए प्रार्थनाः हे पिता, मुझे अपना वचन सिखाएं। मैं इसे अपने हृदय में बसा लूंगा ताकि आपके विरूद्ध पाप न करूँ। अपने वचन के माध्यम से मुझसे बात करें और मेरे भविष्य के लिए आपकी योजना और आपके विचार दर्शाएं। सब डर और गल्तियाँ दूर करने के लिए मुझे अनुग्रह दें। मैं आपके वचन पर प्रतीति करने का चयन करता हूँ।

आज के लिए वचनः यूहन्ना 17:17 सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर : तेरा वचन सत्य है।

भजन 19:14 मेरे मुंह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों, हे यहोवा परमेश्वर, मेरी चट्टान और मेरे उद्धार करनेवाले!

मरकुस 12:24 यीशु ने उन से कहा; क्या तुम इस कारण से भूल में नहीं पड़े हो, कि तुम न तो पवित्रशास्त्र ही को जानते हो, और न परमेश्वर की सामर्थ को।

हम जो कहते हैं वह कहा जाएगा

आज के इस तकनीकी संसार में यह ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि हम क्या कहते हैं क्योंकि हम नहीं जानते कि कौन कौन सुन रहा है। चाहे हम अपने मोबाइल फोन पर सबके सामने बात कर रहे हैं या चाहे हमारे दफ्तर की पतली सी दीवार हो, सामान्यतः लोग उन बातों को सुन लेते हैं जिन्हें वे सुनना नहीं चाहते। तथापि, इससे हमें हैरान नहीं हो जाना चाहिए।

edit copy

परमेश्वर का वचन स्पष्ट है: आप जो कहेंगे वही कहा जाएगा। दुर्भाग्यवश, जब बातचीत बार बार दोहराई जाती है तो अधिकतर बार ऐसा होता है कि इच्छित अर्थ हमेशा स्थानान्तरित नहीं हो पाता है। इसलिए अच्छा है कि हम ऐसी बेकार की बातचीत में अपने आप को न लगाएं जिसे हम चाहते हैं कि दूसरे लोग न सुनें। शायद इसीलिए भजनकार परमेश्वर से कहता है कि उसके मुंह पर पहरूआ बैठाए और उसके होंठों की रखवाली करे। यदि आप जानते हैं कि सब लोग सुन रहे हैं तो आप कौन सी बात नहीं कहेंगे?

आज के लिए प्रार्थना: हे पिता, आपका वचन कहता है कि जो व्यक्ति अपने शब्दों में नहीं चूकता, वही सिद्ध व्यक्ति है। मैं जानता हूँ कि जीभ में यह क्षमता है कि यह रिश्तों में आग लगा दे और सबसे अच्छे मित्रों में भी फूट डाल दे। मेरी जीभ पर लगाम लगाने और मेरे मुंह पर पहरा ठहराने में मेरी सहायता करें।

आज के लिए वचन: सभोपदेशक 10:20 राजा को मन में भी शाप न देना, न धनवान को अपने शयन की कोठरी में शाप देना; क्योंकि कोई आकाश का पक्षी तेरी वाणी को ले जाएगा, और कोई उड़नेवाला जन्तु उस बात को प्रगट कर देगा।

लूका 12:3 इसलिये जो कुछ तुम ने अन्धेरे में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा: और जो तुम ने कोठरियों में कानों कान कहा है, वह कोठों पर प्रचार किया जाएगा।

भजन 141:3 हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा, मेरे हाठों के द्वार की रखवाली कर!

हम जो करते हैं वह पता चल जाएगा

कचहरियां और बन्दीगृह ऐसे लोगों से भरे पड़े हैं जिन्होंने वे काम किए हैं जो वह न करते, यदि उन्हें केवल इतना पता होता है कि जो कुछ वे कर रहे हैं, उसके बारे में सब लोगों को पता चल जाएगा। वे क्या सोच रहे होंगे? यदि वे ऐसे जीवन में एक बार पड़ गए हैं तो वे बाहर नहीं निकल पाएंगे। सब कुछ प्रकट हो जाएगा, या तो इस जीवन में या मसीह के न्याय सिंहासन के सामने।

आप जो कुछ करते हैं वह पता चल जाएगा! यह सत्य है। एक ही बात में हमें आत्मविश्वास मिल सकता है कि हम ऐसे काम बिल्कुल न करें जिन्हें हम नहीं चाहते कि दूसरे लोग उन्हें जानें। पवित्रशास्त्र सरल है और इसकी शिक्षा हमें सीधे और सकरे मार्ग पर बनाए रखती है।

परमेश्वर गुप्त में किए गए भले कामों का प्रतिफल भी सबके सामने देते हैं.....आप जो करते हैं वह पता चल जाएगा।

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मुझे और मेरे प्रियों को अच्छी समझ दें ताकि हम वे काम न करें जिनसे आप अप्रसन्न होते हैं या जिनसे आप के नाम का निरादर होता है। यह याद रखने में मेरी सहायता करें कि मैं एक मसीही हूँ और मसीही जीवन जीना, सही और धर्मी निर्णय लेना मेरी जिम्मेदारी है।

आज के लिए वचन: लूका 12:2 कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा।

मत्ती 6:4 ताकि तेरा दान गुप्त रहे; और तब तेरा पिता जो गुप्त में देखता है, तुझे प्रतिफल देगा।

इफिसियों 6:8 क्योंकि तुम जानते हो कि जो कोई जैसा अच्छा काम करेगा, चाहे दास हो चाहे स्वतंत्र, प्रभु से वैसा ही प्रतिफल पाएगा।

आप जो प्रतीति करते हैं वह परखा जाएगा

उस दृष्टांत में, जिसमें किसान अपने खेतों में बीज बो रहा था, तुरन्त वहां पक्षी खेतों में से नए बीज चुराने का प्रयास करने के लिए आ गए। बाद में अपने शिष्यों को उस दृष्टांत का अर्थ समझाते हुए प्रभु यीशु कहते हैं कि बीज वास्तव में परमेश्वर के वचन का प्रतीक है। खेत मनुष्य का हृदय है, जबकि पक्षी शैतान का प्रतीक हैं। प्रभु यीशु ने कहा, "शैतान तुरन्त आकर उनके हृदयों में से वचन चुरा कर ले जाता है।"

शैतान हमारा शत्रु है और हम परमेश्वर के बारे में, उनकी भलाई और उनके प्रेम के बारे में जो कुछ भी प्रतीति करते हैं वह उन सब को परखने के प्रत्येक अवसर का लाभ उठाएगा। जब शैतान ने अदन की वाटिका में हव्वा से बात की तो उस समय भी हम यही प्रक्रिया देखते हैं। फिर उसने उस प्रतीति को परखा जो वह जानती थी कि परमेश्वर ने उसे कहा है। हव्वा उस परख में असफल हो गई! जब आप परखे जाएंगे तो आप क्या करेंगे?

आज के लिए प्रार्थना: हे स्वर्गिक पिता, मुझे जीवन की प्रत्येक परख में सफल होने और उन सत्यों को थामें रखने का बल दें जो मैंने आपके वचन में से सीखे हैं। मुझे मेरी सामर्थ से बढ़कर परख में न पड़ने दें।

आज के लिए वचन: उत्पत्ति 3:1–5 यहोवा परमेश्वर ने जितने बनैले पशु बनाए थे, उन सब में सर्प धूर्त था, और उस ने स्त्री से कहा, क्या सच है, कि परमेश्वर ने कहा, कि तुम इस वाटिका के किसी वृक्ष का फल न खाना ? स्त्री ने सर्प से कहा, इस वाटिका के वृक्षों के फल हम खा सकते हैं। पर जो वृक्ष वाटिका के बीच में है, उसके फल के विषय में परमेश्वर ने कहा है कि न तो तुम उसको खाना और न उसको छूना, नहीं तो मर जाओगे। तब सर्प ने स्त्री से कहा, तुम निश्चय न मरोगे, वरन परमेश्वर आप जानता है, कि जिस दिन तुम उसका फल खाओगे उसी दिन तुम्हारी आंखे खुल जाएंगी, और तुम भले बुरे का ज्ञान पाकर परमेश्वर के तुल्य हो जाओगे।

हम समझौता करके जो अपने पास रख लेते हैं, उसे हम खो देंगे

अधिकतर लोगों का चरित्र अच्छा है और नैतिक मूल्य भी ठीक–ठाक हैं। हम बचपन से ही सीखते हैं कि चोरी करना, धोखा देना, झूठ बोलना और ऐसे ऐसे काम गलत हैं। साधारणतः हमारा व्यवहार हमारे नैतिक मूल्यों के द्वारा नियंत्रित और सिद्धांतों की भावना के द्वारा मार्गदर्शित होता है। कभी कभी हमें अपने लाभ के लिए अपनी खराई से समझौता कर लेने के प्रलोभन का भी सामना करना पड़ता है।

समझौते का एक नियम है, तथापि, यह कहता है कि समझौता करके जो वस्तु अपने पास रखी जाती है, उसे वह व्यक्ति खो देता है। रूचिकर बात यह है कि यह सिद्धांत परमेश्वर के वचन में भी पाया जाता है। मसीही होने के लिए हमें अपने आप का इनकार करने, और अपना क्रूस उठाकर यीशु का अनुसरण करने के लिए कहा गया है। आगे हमें कहा गया है कि यदि, उसके विपरीत, हम अपने जीवन को बचाना चाहेंगे तो अंत में उसे खो देंगे। हम जो कुछ प्राप्त करने के लिए समझौता करते हैं वह हमें कभी नहीं मिल सकता!

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मुझे अपने सिद्धांतों के अनुसार जीने का बल दें ... उन सिद्धांतों के अनुसार जो मैंने आपके वचन में से सीखे हैं। मुझे अपनी सब बातों में ईमानदार बनने में सहायता करें और इसके लिए भी कि मैं बेकार और अस्थाई लाभ के लिए अपनी खराई को बेच न दूँ।

आज के लिए वचन: मरकुस 8:34–35 उस ने भीड़ को अपने चेलों समेत पास बुलाकर उन से कहा, जो कोई मेरे पीछे आना चाहे, वह अपने आपे से इनकार करे और अपना क्रूस उठाकर, मेरे पीछे हो ले। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे वह उसे खोएगा, पर जो कोई मेरे और सुसमाचार के लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे बचाएगा।

मत्ती 16:26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?

जब हम केवल वही कर रहे हैं जो हम करने में सक्षम हैं, तो शायद परमेश्वर कुछ नहीं कर रहा है

बहुत बार हम अपनी क्षमताओं में ही जीते रहने का चयन कर लेते हैं, और अपनी क्षमताओं से बढ़कर प्रयत्न करने से डरते हैं। हम भूल गए हैं कि हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सेवा कर रहे हैं जिसने ब्रह्माड को अपने वचन से रचा और संसार को ऐसी वस्तुओं से बनाया जो प्रत्यक्ष में नहीं थी। परमेश्वर असंभव बातों को संभव बनाने में विशेषज्ञ है।

हम में से प्रत्येक जन उस कार्य को, जो परमेश्वर ने हमें करने के लिए बुलाया है, तब तक नहीं कर सकता, जब तक परमेश्वर उसमें अपना आलौकिक हस्तक्षेप न करे। मूसा द्वारा लाल समुद्र के विभाजन से लेकर एलिय्याह द्वारा स्वर्ग से अग्नि बुलाने तक, पतरस द्वारा पानी पर चलने से लेकर मरियम के सामने यीशु की कब्र का पत्थर लुड़कने तक, हम सभी को आलौकिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है। जब हम परमेश्वर की प्रतीति करते हैं तो कुछ भी असंभव नहीं होगा।

<u>*आज के लिए प्रार्थना:*</u> हे परमेश्वर पिता, मुझे अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आपकी आवश्यकता है। आएं और नियंत्रण कर लें। मैं ऐसे कार्य करूँगा मानो सब कुछ मुझ पर ही निर्भर है और ऐसे प्रार्थना करूँगा मानो सब कुछ आप पर ही निर्भर है। जो काम मैं नहीं कर सकता उन्हें आप ले लें, और उन्हें पूरा करने का बल मुझे दें। सारी महिमा आपको मिले।

<u>*आज के लिए वचन:*</u> मत्ती 19:26 यीशु ने उन की ओर देखकर कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

मरकुस 9:23 यीशु ने उस से कहा; यदि तू कर सकता है; यह क्या बात है? विश्वास करनेवाले के लिये सब कुछ हो सकता है।

मरकुस 14:36 हे अब्बा, हे पिता, तुझ से सबकुछ हो सकता है, इस कटोरे को मेरे पास से हटा ले; तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, पर जो तू चाहता है वही हो।

भविष्य किसी एक व्यक्ति की न तो प्रतीक्षा करता है और न ही किसी एक व्यक्ति पर आश्रित है

जब एस्तेर असमंजस्य में थी कि यहूदियों के लिए मध्यस्थी करने के लिए बिना बुलाए राजा की उपस्थिति में जाए या न जाए, उस समय वह अपने डर से लड़ रही थी। इस घटना में, उसके चचेरे भाई और अभिभावक, मुद्रकै, ने उस पर एक अमिट सत्य प्रकट किया। "यदि इस समय तू चुप रही, तो यहूदियों के लिए सहायता और छुटकारा कहीं और से आ जाएगा; परन्तु तू और तेरा घराना नाश हो जाएंगे। कौन जानता है? शायद तू आज के इस समय के लिए ही रानी बनी है।"

भविष्य किसी एक व्यक्ति की न तो प्रतीक्षा करता है और न ही किसी एक व्यक्ति पर आश्रित है। परमेश्वर के पास एक योजना है, वह सफल होगें, और उस में भागीदार बनने का अवसर हमारे पास है। तथापि, यदि हम उसमें भागीदार न बनने का निर्णय लेते हैं, तौभी परमेश्वर तो सफल होगें ही, केवल इतना ही होगा कि वह किसी और को इस्तेमाल करेंगे।

<u>*आज के लिए प्रार्थना:*</u> हे परमेश्वर, मैं आपके लिए अपनी सबसे बड़ी सेवा के दिन को और उस आशीष को, जिसके लिए आपने मुझे रचा है, खोना नहीं चाहता हूँ। मुझे अपनी बुलाहट पहचानने और आपके बुलाने पर इस्तेमाल होने के लिए तैयार रहने में सहायता करें।

<u>*आज के लिए वचन:*</u> एस्तेर 4:14 क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी। फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?

1 राजा 18:21 और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, तुम कब तक दो विचारों में लटके रहोगे, यदि यहोवा परमेश्वर हो, तो उसके पीछे हो लो; और यदि बाल हो, तो उसके पीछे हो लो। लोगो ने उसके उत्तर में एक भी बात न कही।

स्वर्ग और पृथ्वी दोनों ही जीवन के निर्णायक युद्धों की अगुवाई करने के लिए जोशीले, निर्णात्मक और दृढ़निश्चयी व्यक्तियों को चुनते हैं

सारा संसार एक ऐसे अगुवे की तलाश में है, एक ऐसा व्यक्ति जो जानता है कि वह कहां जा रहा है और ऐसा व्यक्ति जो यह प्रकट करे कि सफलता के लिए जो कुछ आवश्यक है, वह सब उसके पास है। चाहे हम उन्हें हिम्मती, साहसी, दार्शनिक, चमत्कारी या बलशाली कह कर पुकारें, परन्तु यह सच है कि लोग मजबूत अगुवों का अनुसरण करते हैं।

वास्तव में, स्वर्ग और पृथ्वी दोनों ही जीवन के निर्णायक युद्धों की अगुवाई करने के लिए जोशीले, निर्णात्मक और दृढ़निश्चयी व्यक्तियों को चुनते हैं। हम उन लोगों में अपना भरोसा डालने की धारणा रखते हैं, जिनके बारे में हम सोचते हैं कि वे खतरे की परिस्थिति में भी बिना डोले अपना काम पूरा करेंगे। वह क्या है जिसे आप पूरा करने के लिए दृढ़निश्चयी हैं?

आज के लिए प्रार्थना: हे पिता, मेरी सहायता करें कि मैं संकट के दिन निर्बल या बेहोश न हो जाऊँ। मुझे उस स्थान का दर्शन दें जहां आप मुझे देखना चाहते हैं और मुझे उन अड़चनों का सामना करने का साहस दें जो मुझे हराने का प्रयत्न करती हैं। मैं आपकी इच्छा को पूरा करने के लिए दृढ़निश्चयी हूँ। दूसरों को आपकी इच्छा में सफल होने के लिए उनकी अगुवाई करने में मेरी सहायता करें।

आज के लिए वचन: यहोशू 1:9 क्या मैं ने तुझे आज्ञा नहीं दी? हियाव बान्धकर दृढ़ हो जा; भय न खा, और तेरा मन कच्चा न हो; क्योंकि जहां जहां तू जाएगा वहां वहां तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।

यहोशू 1:16–18 तब उन्हों ने यहोशू को उत्तर दिया, कि "जो कुछ तू ने हमें करने की आज्ञा दी है वह हम करेंगे, और जहां कहीं तू हमें भेजे वहां हम जाएंगे। जैसे हम सब बातों में मूसा की मानते थे वैसे ही तेरी भी माना करेंगे; इतना हो कि तेरा परमेश्वर यहोवा जैसा मूसा के संग रहता था वैसे ही तेरे संग भी रहे। कोई क्यों न हो जो तेरे विरूद्ध बलवा करे, और जितनी आज्ञाएं तू दे उनको न माने, तो वह मार डाला जाएगा। परन्तु तू दृढ़ और हियाव बान्धे रह।"

खर्चीले रख–रखाव और प्रभावहीन गतिविधियों पर अपने संसाधन व्यर्थ न करें

हम बहुत सारे काम केवल इसलिए करते हैं क्योंकि हम उन्हें हमेशा से ही करते आ रहे हैं। ये अधिकतर दैनिक कार्य, परम्पराएं या कर्त्तव्य जीवन की आदतों से बढ़कर और कुछ भी नहीं हैं। उनसे कुछ या अधिक लाभ नहीं होता और वे हमारे समय और संसाधनों को व्यर्थ करते हैं।

शायद समय सबसे बढ़कर अनमोल सम्पत्ति है। एक बार यदि यह खर्च हो जाए तो इसे दोबारा प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए अवश्य है कि हम अपने जीवन को बहुमूल्य जानें। उसके लिए हमें यह जानने की आवश्यकता है कि हम खर्चीले रख–रखाव, समय खाने वाली और लाभहीन गतिविधियों पर अपने संसाधन व्यर्थ करना कब रोकें। आज ही अपने आप को और अपनी गतिविधियों को जांचें, प्राथमिकताओं को व्यवस्थित करें और उसके द्वारा आने वाली शांति का आनन्द उठाएं।

याद रखें ... गतिविधि हमेशा उत्पादक नहीं होती।

आज के लिए प्रार्थना: हे स्वर्गिक पिता, मैं मांगता हूँ कि आप मेरे जीवन, मेरे समय और मेरे संसाधनों के लिए अपनी प्राथमिकताएं मुझे दर्शाएं। मैं उन अनमोल वरदानों में से, जो आपने मुझे दिए हैं, किसी एक को भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहता हूँ। जो गतिविधियां मुझे रोकने की आवश्यकता है उन्हें रोकने में और उनके स्थान पर जीवन की अधिक फलदायक रोमांचकारी गतिविधियों को आरम्भ करने में मेरी सहायता करें।

आज के लिए वचन: तीतुस 3:14 और हमारे लोग भी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अच्छे कामों में लगे रहना सीखें ताकि निष्फल न रहें।

इफिसियों 5:15–16 इसलिए ध्यान से देखो कि कैसी चाल चलते हो, निर्बुद्धियों के समान नहीं, पर बुद्धिमानों के समान चलो। और अवसर को बहुमोल समझो क्योंकि दिन बुरे हैं।

आवाज़ का अनुसरण करो, गूँज का नहीं

प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की ओर से केवल अपने लिए एक निर्देश, एक व्यक्तिगत वचन प्राप्त करने का हक़दार है। तथापि, लोग दूसरों से गवाहियां सुनते हैं जो सुनने में अच्छी होती हैं और उनकी सराहना भी की जानी चाहिए परन्तु जरूरी नहीं है कि उनका अनुसरण भी किया जाए। उस विवरण में कि कैसे परमेश्वर ने किसी दूसरे के जीवन में कार्य किया और उस निर्देश में कि परमेश्वर हमारे जीवन में कैसे कार्य करना चाहता है, बहुत भिन्नता है। यह एक आवाज़ और एक गूँज में की भिन्नता है।

अधिकतर ऐसा हो सकता है और होता है कि गूँज विभिन्न स्थानों से आती है। समय के साथ साथ वे कमजोर पड़ जाती हैं और अपने बलबूते पर ताज़ा वचन बोलने में का बल उसमें नहीं होता। तथापि, परमेश्वर की आवाज़, जिस भी परिस्थिति में बोलती है, उसमें दिशा और बल ले आती है। परमेश्वर की आवाज़ और अपने जीवन के लिए उसके निर्देश सुनने के लिए परमेश्वर से कान मांगें।

आज के लिए प्रार्थना: हे प्रभु, आपने कहा है कि आपकी भेड़ आपका शब्द पहचानती हैं और आपके पीछे हो लेती हैं ... और यह कि वे किसी अजनबी की आवाज़ के पीछे नहीं जाती। आपकी आवाज़ को ऊँचा और स्पष्टता से सुनने के लिए कान प्राप्त करने में मेरी सहायता करें। जब मैं पवित्र आत्मा को अपने से सीधे बात करते हुए सुनता हूँ तो अपने वचन के सत्य के द्वारा आप मेरी अगुवाई करें।

आज के लिए वचन: नीतिवचन 3:5–6 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।

यिर्मयाह 33:3 मुझ से प्रार्थना कर और मैं तेरी सुनकर तुझे बड़ी–बड़ी और कठिन बातें बताऊंगा जिन्हें तू अभी नहीं समझता।

आपको कोई समस्या है और आप स्वयं एक समस्या हैं, इन दोनों बातों में भिन्नता है

जब हम मसीही लोग ऐसे कामों, बातचीत या गतिविधियों में लग जाते हैं, जो मसीही जैसी जीवनशैली को प्रस्तुत नहीं करते, तो समस्या हो जाती है। जब पहली बार हमें इसके बारे में पता चलता है तो उसी समय इसे सुधार देना चाहिए। यदि हम अपने सामने आई हुई समस्या के बारे में कुछ नहीं करते हैं, तो ऐसा समय आ जाता है जब वह समस्या हमारे सामने ही नहीं रहती बल्कि हमें पूरी तरह से जकड़ लेती है।

आपको कोई समस्या है और आप स्वयं एक समस्या हैं, इन दोनों बातों में भिन्नता है। कभी कभी समाधान केवल इतना होता है कि हम मान लें कि समस्या हमारे कारण हो रही है और परमेश्वर से उसके लिए सहायता मांगें। अपने भरोसेमंद मित्रों और परिवार वालों को सुनें, हो सकता है कि वे आपको उस समस्या का पता लगाने में आपकी सहायता करें, जो आपसे छिपी हुई है।

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मुझे अपने आप को अपने भरोसेमंद मित्रों और परिवार वालों की नज़र से देखने में सहायता करें। मुझ से बात करें और अपने जीवन के उन क्षेत्रों को सुधारने का अनुग्रह दें जब मैं दूसरों को परेशान करता हूँ, अपने आप को धोखा देता हूँ या आपको निराश करता हूँ। मुझे क्षमा कर दें और मुझे बल दें।

आज के लिए वचन: 2 कुरिन्थियों 13:5 अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं; अपने आप को जांचो, क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते, कि यीशु मसीह तुम में है? नही ंतो तुम निकम्मे निकले हो।

लूका 6:41–42 तू अपने भाई की आंख के तिनके को क्यों देखता है, और अपनी ही आंख का लट्ठा तुझे नहीं सूझता? और जब तू अपनी ही आंख का लट्ठा नहीं देखता, तो अपने भाई से क्योंकर कह सकता है, हे भाई, ठहर जा तेरी आंख से तिनके को निकाल दूं? हे कपटी, पहिले अपनी आंख से लट्ठा निकाल, तब जो तिनका तेरे भाई की आंख में है, भली भांति देखकर निकाल सकेगा।

निर्णायक व्यक्ति ही निर्णय लेते हैं

प्रभु की शिक्षाओं में बच्चों का पालन पोषण करते हुए माता पिता को दृढ़ निर्णय लेने चाहिएं। क्योंकि अन्य बच्चों को बुरा व्यवहार करने या बचपन से ही अपना जीवन अपनी मर्जी से जीने की अनुमति दी जाती है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि यही उनके लिए अच्छा है। बहुत बार बच्चे, अपने मित्रों के प्रभाव में आकर, अपने प्रेमी माता पिता को तानाशाह और कठोर व्यक्तियों के रूप में देखने लग जाते हैं।

व्यस्क भी अपने जीवन के विभिन्न हालातों में अपने आप पर बेवजह नियंत्रण होता हुआ महसूस कर सकते हैं। उन अधिकारियों को भी याद किया जा सकता है जो गलत निर्णय ले लेते हैं जिनसे दूसरे लोग सीमित हो जाते हैं। एक अगुवे की सही आवाज़ को वे लोग तानाशाही कह सकते हैं जिन पर उस आवाज़ का नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। तथापि, कुछ परिस्थितियों के कारण सही अगुवों को अपने स्थान में खड़े होकर साहसी निर्णय भी लेने पड़ते हैं।

आज के लिए प्रार्थना: हे पिता, आपने मेरे जीवन में जो सही अगुवे रखे हैं उन्हें पहचानने और उनका अनुसरण करने में मेरी सहायता करें। जैसे मैं यह करता हूँ, हे प्रभु, उन लोगों पर भी अनुग्रह कर जिन पर मेरे निर्णयों का प्रभाव पड़ता है। हे स्वामी, मैं सदा आपको प्रसन्न करता रहूँ।

आज के लिए वचन: इब्रानी 13:17 अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते हैं जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं।

रोमियों 13:1–2 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के आधीन रहे; क्योंकि कोई ऐसा अधिकार नहीं, जो परमेश्वर की ओर से न हो; और जो अधिकार हैं वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। इसलिए जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का सामना करता है, और सामना करने वाले दण्ड पाएंगे।

असफलता हमारे समर्पण को परखती है, सफलता हमारे चरित्र को परखती है

edit copy

कठोर समय, कठिन हालात, नुकसान, संकट, और असफलताएं हमारे समर्पण को परखती हैं। बहुत सारे लोग इन कठिन हालातों में से गुजरते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं। तथापि, हमारा जीवन हमारे सामने दूसरी और अधिकतर बार अधिक चुनौतीपूर्ण परख लेकर आता है।

जबकि असफलता हमारे समर्पण को परखती है, सफलता हमारे चरित्र को परखेगी। जब हम अपने जीवन में सफल हो जाते हैं और हमारे हाथों में अधिक समय होता है, आवश्यकता से अधिक धन होता है, पहले से अधिक बड़े अवसर होते हैं, तब हम क्या करेंगे? जब ऐसा प्रतीत होता है कि अब हमें परमेश्वर पर अधिक निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं है, तब हम क्या करेंगे? क्या हम परमेश्वर को भूल जाएंगे और अपने रास्ते पर आगे बढ़ जाएंगे? क्या सफलता के क्षेत्र में परमेश्वर हम पर भरोसा कर सकते हैं? अपने चरित्र की परख में सफल होने के लिए अपने आप को अभी तैयार करें और योजना बनाएं और समर्पित बने रहें।

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मैं अपने जीवन भर आपकी सेवा करना चाहता हूँ। मुझे अपने समर्पण में बने रहने और आपके लिए अपना सर्वोत्तम करने की क्षमता और दृढ़ता मुझे दें। हे प्रभु, जब मैं सफल हो जाऊँगा तो आपको नहीं भूलूँगा। आपके प्रति अपने समर्पण में मैं निरंतर आगे बढ़ता रहूँगा और अपनी दृष्टि में छोटा बना रहूँगा।

आज के लिए वचन: व्यवस्थाविवरण 8:10–14 और तू पेट भर खाएगा, और उस उत्तम देश के कारण जो तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे देगा उसको धन्य मानेगा। इसलिये सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि अपने परमेश्वर यहोवा को भूलकर उसकी जो जो आज्ञा, नियम, और विधि, मैं आज तुझे सुनाता हूँ उनका मानना छोड़ दे; ऐसा न हो कि जब तू खाकर तृप्त हो, और अच्छे अच्छे घर बनाकर उन में रहने लगे, और तेरी गाय–बैलों और भेड़–बकरियों की बढ़ती हो, और तेरा सोना, चांदी, और तेरा सब प्रकार का धन बढ़ जाए, तब तेरे मन में अहंकार समा जाए, और तू अपने परमेश्वर यहोवा को भूल जाए....

कुछ लोग असफल होते हैं और इस प्रक्रिया में कुछ नहीं सीखते....कितने दुख की बात है

यह बात मायने नहीं रखती कि हम किन हालातों का सामना कर रहे हैं, बल्कि यह बात मायने रखती है कि उन हालातों के बाद हम क्या बन जाएंगे। जीवन के हालात या तो हमें तोड़ सकते हैं या हमें सिखा सकते हैं... चयन हमारा है। हम हमेशा तो यह निर्धारित नहीं कर सकते कि हम किन हालातों का सामना करेंगे, परन्तु यह अवश्य निर्धारित कर सकते हैं कि उन हालातों का सामना हम कैसे करेंगे।

आज यह फैसला कर लें कि जीवन के दबाव और समस्याएं और यहां तक कि आपकी असफलताएं भी आपके लिए कुछ सीखने का कारण बन जाएंगी, ताकि वही निराशाएं भविष्य में दोबारा न आएं। अनुभव एक अच्छा शिक्षक है, यहां तक कि बुरा अनुभव भी। अपनी गल्तियों से सीखें।

आज के लिए प्रार्थना: हे प्रिय परमेश्वर, मुझे बुद्धि दें ताकि मैं अपनी असफलताओं को स्वर्ग के दृष्टिकोण से देखूँ। मुझे और दूसरों को भविष्य के लिए बड़े बड़े पाठ सिखाने के लिए मेरे जीवन को इस्तेमाल करें। जहां जहां मैंने आपको असफल किया है, उसके लिए मुझे क्षमा कर दें और मुझे उत्तम दिनों की ओर ले चलें।

आज के लिए वचन: भजन 51:10–12 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर स्थिर आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर। मुझे अपने साम्हने से निकाल न दे, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर। अपने किए हुए उद्धार का हर्ष मुझे फिर से दे, और उदार आत्मा देकर मुझे सम्भाल।

परमेश्वर की जुंबिश अलग–थलग से होने वाला अनुभव नहीं है बल्कि जीवनभर बने रहने के लिए रचा गया है

परमेश्वर की सच्ची जुंबिश व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों को आने वाले कई दशकों तक प्रभावित करेगी। अपने आप में, जश्न और/या तरोताज़गी के अलग–थलग समय, चाहे खूबसूरत ही क्यों न लगें, जरूरी नहीं है कि परमेश्वर की जुंबिश से भरे हुए हों। जब परमेश्वर जुंबिश करते हैं तो हालात और लोग बदल जाते हैं। लोग उचित और परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीना आरम्भ कर देते हैं।

परमेश्वर की जुंबिश अलग–थलग से होने वाला अनुभव नहीं है बल्कि जीवनभर बने रहने के लिए रचा गया है। यह पहचानने में हमें कई वर्ष भी लग सकते हैं कि क्या हमने सचमुच परमेश्वर की जुंबिश को अनुभव किया है। जीवन की लहरों के साथ बहने, कभी ऊपर कभी नीचे, एक आत्मिक अनुभव से दूसरे आत्मिक अनुभव में जीने, एक जश्न से दूसरे जश्न में जाने, एक पार्टी से दूसरी पार्टी में जाने के स्थान पर परमेश्वर से मांगें कि वह सचमुच आपके जीवन में जुंबिश करें ... ऐसी जुंबिश जो आपको एक घंटे, एक दिन या एक सप्ताह से कहीं बढ़कर चालित कर दे। अपने दैनिक मसीही जीवन में स्थिरता लाएं।

<u>*आज के लिए प्रार्थना:*</u> हे परमेश्वर, मैं आपसे मांगता हूँ कि मेरे जीवन में इस प्रकार से जुंबिश करें कि मैं पूरी तरह से बदल जाऊँ और प्रतिदिन मैं आपके अनुग्रह और कृपादृष्टि में बढ़ता जाऊँ। तनाव, चिंता और डर को मुझसे दूर रखें। आनन्द को मेरा भाग और शांति को मेरा प्रतिफल बना दें। मुझे और अधिक अपने जैसा बना लें। मैं आपके लिए एक महान जीवन जीना चाहता हूँ।

<u>*आज के लिए वचन:*</u> मरकुस 4:5–6, 16–17 और कुछ पत्थरीली भूमि पर गिरा जहां उस को बहुत मिट्टी न मिली, और गहरी मिट्टी न मिलने के कारण जल्द उग आया। और जब सूर्य निकला, तो जल गया, और जड़ न पकड़ने के कारण सूख गया। और वैसे ही जो पत्थरीली भूमि पर बोए जाते हैं, ये वे हैं, कि जो वचन को सुनकर तुरन्त आनन्द से ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु जब वचन के कारण उपद्रव होता है तो तुरन्त ठोकर खाकर गिर पड़ते हैं।

अपना सारा जीवन ऐसी सीढ़ी पर चढ़ने में न बिता दें जिसके ऊपरी सिरे पर चढ़कर आपको पता चले कि यह तो गलत दीवार पर लगी हुई थी

हमने ऐसा बहुत बार सुना है कि 'मुख्य बात यह है कि मुख्य बात को मुख्य बात ही रहने दो'। मुख्य बात क्या है? क्या यह नौकरी है; क्या यह धन है, शायद ताकत, पदवी, या इज्ज़त? इनमें से कोई भी वस्तु प्राण की प्यास को नहीं बुझा सकती। यदि सफलता सचमुच संतुष्टि देती तो एल्विस प्रेसले जैसे लोग आज भी खुशी खुशी जी रहे होते।

मुख्य बात क्या है? आपके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा और उद्देश्य को जानना और पालन करना। और किसी भी वस्तु से संतुष्टि नही मिलेगी, न तो इस जीवन में और न ही आने वाले जीवन में। आपके हृदय में शांति और आपके घर में आनन्द परमेश्वर को प्रसन्न करने वाला जीवन जीने के परिणाम हैं। पमरेश्वर से पूछें कि मुख्य बात पर ध्यान लगाते हुए आप अपनी जीविका कैसे कमा सकते हैं, जीवन कैसे जी सकते हैं और फर्क कैसे ला सकते हैं। आप के पास खोने के लिए आपका है ही क्या?

<u>*आज के लिए प्रार्थना:*</u> हे प्रभु, मैं ऐसा जीवन नहीं जीना चाहता जो मुझे तो संतुष्ट कर रहा है परन्तु आपको प्रसन्न नहीं कर रहा। मैं आपके और साथ ही साथ आपकी योजना के लिए सफल और महत्त्वपूर्ण होना चाहता हूँ। मुझे दर्शाएं कि मैं क्या करूँ। मेरे ध्यान को जहां जहां बदलने की आवश्यकता है, वहां इसे बदलें। मुझे अपनी प्राथमिकताओं को पहचानने और व्यवस्थित करने में सहायता करें।

<u>*आप के लिए वचन:*</u> मत्ती 16:26 यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?

1 तीमुथियुस 6:17 इस संसार के धनवानों को आज्ञा दे कि वे अभिमानी न हों और चंचल धन पर आशा न रखें, परन्तु परमेश्वर पर जो तुम्हारे सुख के लिए सब कुछ बहुतायत से देता है।

मत्ती 6:33 इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं तुम्हें मिल जाएंगी।

विश्वास का अर्थ समस्या से इनकार करना नहीं है बल्कि आगे बढ़ते जाना है

उत्पत्ति में जब परमेश्वर ने ऐसा कुछ देखा जिसे देखकर वह प्रसन्न नहीं हुए और उसे बदलना चाहते थे, तो उन्होंने बोला। जब परमेश्वर ने कहा, 'उजियाला हो!' तो उस समय परमेश्वर ने उस सिद्धांत को स्थापित किया जिसे आज हम 'विश्वास और अंगीकार' के नाम से जानते हैं। परमेश्वर ने अंधकार के अस्तित्व से इनकार नहीं किया। परिवर्तन को सकारात्मक रूप में प्रभावशाली करने के लिए परमेश्वर ने उन बातों को, जो नहीं थीं, ऐसा बोला मानों वे हैं, और इसका विपरीत नहीं किया।

नए नियम में मसीहियों को निर्देश दिए गए हैं कि वे परमेश्वर जैसे बनें और यह भी कि "उन बातों को जो नहीं हैं ऐसे बोलें मानों वे हैं"। हमें अपने सामने खड़े समस्याओं के पहाड़ से इनकार नहीं करना है, बल्कि विश्वास के साथ बोलने और उस पहाड़ को वहां से हटने का आदेश देने के द्वारा उसके वहां पर निरंतर बने रहने के अधिकार का इनकार करना है। केवल इतना कह देने से कि "पहाड़ वहां नहीं है" काम नहीं चलेगा।

आज के लिए प्रार्थना: हे पिता, मुझे मेरे जीवन की समस्याओं और उन क्षेत्रों का सामना करने में सहायता करें जिनसे मैं खुश नहीं हूँ और जिन्हें मैं बदलना चाहता हूँ। मुझे अपने जीवन के लिए आपकी इच्छा पर प्रतीति करने का विश्वास और उसकी उद्‌घोषणा करने का बल दें। मेरे चारों ओर अपने स्वर्गदूत दें, जो मेरे विश्वास की उद्‌घोषणा के अनुसार कार्य करें।

आज के लिए वचन: उत्पत्ति 1:3 तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया।

रोमियों 4:17 ...जैसा लिखा है, "मैंने तुझे बहुत सी जातियों का पिता ठहराया है", उस परमेश्वर के सामने जिस पर उसने विश्वास किया और जो मरे हुओं को जिलाता है, और जो बातें हैं ही नहीं, उनका नाम ऐसा लेता है कि मानो वे हैं।

इब्रानी 10:23 अपने आशा के अंगीकार को दृढ़ता से थामें रहें; क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा की है, वह सच्चा है।

अधिकतर बार हमारे सामने जो सबसे बड़ी समस्याएं आती हैं, वे केवल कठोर निर्णय होते हैं जो हमें लेने ही पड़ते हैं

शायद केवल आप ही वो एकमात्र व्यक्ति हैं जो उन बातों के विषय में कुछ कर सकता है जो आपको परेशान कर रही हैं। हमारे जीवन में हमें कुछ कठोर निर्णय लेने पड़ते हैं। अधिकतर बार हम जिन समस्याओं का सामना करते हैं वे हमारे जीवन के उन क्षेत्रों में होती हैं जिनके बारे में हम जानते हैं कि हमें सबसे अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। यदि बुरी बातों को उनके हाल पर ही छोड़ दिया जाए, तो वे आमतौर पर सुधरने की बजाय और बद्‌तर हो जाती हैं।

जीवन मांग करता है कि हम परिवर्तन लाने के लिए सकारात्मक कदम उठाएं। आपके जीवन में किन किन बातों में परिवर्तन आने की आवश्यकता है? आपकी सबसे बड़ी समस्याएं कहां से उभरती हैं? आप इसके विषय में क्या कर सकते हैं? चाहे आप न भी चाहें, तौभी आपको कुछ कठोर निर्णय लेने पड़ेंगे। यदि ऐसा है तो उन्हें लिख लें और उनकी चर्चा परमेश्वर के साथ करें। निर्णय लेने में वही आपकी सहायता करेंगे।

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मैं जानता हूँ कि आपने मेरे जीवन के लिए मुझे ही जिम्मेदार ठहराया है। मुझे उन बातों की जड़ों को देखने के लिए आंखें दें जो मुझे सबसे अधिक परेशान करती हैं और उनके विषय में कुछ करने का बल भी मुझे दें। मुझे अनुग्रह भी दें ताकि मैं शांत, कृपालु और नम्र रहते हुए दृढ़ और निर्णायक बन सकूँ।

आज के लिए वचन: व्यवस्थाविवरण 30:19 मैं आज आकाश और पृथ्वी दोनों को तुम्हारे साम्हने इस बात की साक्षी बनाता हूँ, कि मैंने जीवन और मरण, आशीष और शाप को तुम्हारे आगे रखा है; इसलिये तू जीवन ही को अपना ले, कि तू और तेरा वंश दोनों जीवित रहें।

रोमियों 14:12 सो हम में से हर एक परमेश्वर को अपना अपना लेखा देगा।

भजन 18:35 तू ने मुझ को अपने बचाव की ढाल दी है, तू अपने दहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है, और तेरी नम्रता ने मुझे महत्व दिया है।

अवश्य है कि हम जहां जा रहे हैं वहां पहुंचने के लिए वहीं से आरम्भ करें जहां हम हैं, जो हम चाहते हैं उसे प्राप्त करने के लिए उसे उपयोग में लाएं जो हमारे पास है, और जो कुछ हम पूरा कर सकते हैं उसे करने के लिए उसका प्रयास करें जो हम नहीं कर सकते हैं

जीवन का एक फार्मुला बहुत सरल है। परमेश्वर ने हमारे जीवन में अपनी इच्छा और उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें कुछ वस्तुएं दी हैं। आगे वह हमें स्वप्न, दर्शन, मजबूत चाहतें और प्यारी आशाएं देते हैं। ये हमें प्रेरणा देती हैं कि हमारे पास जो है उसे लें, जहां हम हैं वहीं से आरम्भ करें, और अपना सर्वोत्तम करें।

यह अच्छी बात नहीं है कि हम आरम्भ करने से पहले ही अपनी सब आवश्यकताओं को पूरा होते हुए देखें। हमारे जीवन में कुछ ऐसे अवसर आते हैं जो हमें असम्भव प्रतीत हों, परन्तु फिर भी वे हमारे हृदय में के स्वप्न से बात करते हैं। केवल पैसा कमाने के दृष्टिकोण से कहीं बढ़कर, परमेश्वर के स्वप्न का अनुसरण हमारे प्राण की प्यास से बात करता है। आपको परमेश्वर की ओर से कौन सा स्वप्न मिला है? उसके विषय में इस समय आप क्या कर रहे हैं?

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मेरा भरोसा आप में है। मैं अपनी क्षमताओं पर निर्भर नहीं हो सकता हूँ, केवल उन्हीं पर जो आपने मुझे आपकी इच्छा और उद्देश्य कर पूर्ति के लिए दी हैं। मेरी सहायता करें कि मैं यह जान सकूँ कि मुझे क्या करना है, कब आरम्भ करना है, और आगे कैसे बढ़ना है। मेरा भविष्य आपका ही है।

आज के लिए वचन: 2 राजा 4:2 एलीशा ने उस से पूछा, मैं तेरे लिये क्या करूं? मुझ से कह, कि तेरे घर में क्या है? उस ने कहा, तेरी दासी के घर में एक हांड़ी तेल को छोड़ और कुछ नहीं है।

मत्ती 14:17 उन्हों ने उस से कहा; यहां हमारे पास पांच रोटी और दो मछलियों को छोड़ और कुछ नहीं है।

फिलिप्पियों 4:13 जो मुझे सामर्थ देता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।

फिलिप्पियों 4:19 मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है तुम्हारी हर एक घटी को पूरी करेगा।

एक वस्तु का निर्माण करने के लिए हमें दूसरी को ढाने की आवश्यकता नहीं है

हमारे जीवन के कुछ समयों और कुछ परिस्थितियों के दौरान हम अपने आप को परावर्तन की दशा में पाते हैं। परावर्तन हमें शारीरिक तौर पर, आत्मिक तौर पर, या मानसिक तौर पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाता है। परावर्तन हमें अधिक समस्या में डाले बिना भी बहुत कठोर हो सकता है।

edit copy

नई वस्तु के लिए खुश होना ठीक है। नई वस्तु का निर्माण करने के लिए हमें पुरानी को ढाने की आवश्यकता नहीं है। कुछ परावर्तनों के लिए किसी तरह की कोई सफाई देने की आवश्यकता नहीं होती। अपनी या अपने चारों ओर के लोगों की असुरक्षा की भावना को अपने पिछले जीवन के बारे में बातें न फैलाने दें। हम जहां थे वहां के बारे में नकारात्मक हुए बिना, वहां के बारे में खुश हो सकते हैं जहां हम जा रहे हैं।

आज के लिए प्रार्थना: हे पिता, मुझे अपने जीवन में परावर्तन करने का सही और लाभदायक तरीका सिखाएं। आरम्भ से लेकर अब तक आपने जो कुछ किया है और कर रहे हैं, उन सब के लिए मैं आपका धन्यवादी हूँ। आप जो कुछ करने पर हैं और जहां आप मुझे ले जा रहे हैं, उन सब के विषय में मैं बहुत उत्साहित हूँ। सही दिशा में अपनी यात्रा जारी रखने और आपको प्रसन्न करने में मेरी सहायता करें।

आज के लिए वचन: इफिसियों 4:29 कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उससे सुनने वालों पर अनुग्रह हो।

रोमियों 16:17 अब हे भाइयो, मैं तुम से विनती करता हूँ, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत, जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उनसे दूर रहो।

2 तीमुथियुस 2:23 पर मूर्खता और अविद्या के विवादों से अलग रह; क्योंकि तू जानता है कि उनसे झगड़े होते हैं।

यदि शैतान आपको बुरा नहीं बना सकता तो वह आपको व्यस्त करने का प्रयास करेगा

शैतान की इच्छा यह है कि वह आपको धीमा कर दे, आपको भटका दे, या सम्भव हो तो आपको आपकी दौड़ में से ही बाहर कर दे। धोखा बहुत प्रभावशाली शत्रु है क्योंकि यह बहुत धोखेबाज है। लोग इतने व्यस्त हो जाते हैं, प्रभु के लिए काम कर रहे हैं, एक काम से दूसरे काम की ओर भागदौड़ कर रहे हैं और बहुत उत्पादक प्रतीत हो रहे हैं, जबकि कुछ भी मूल्यवान सम्पन्न नहीं कर रहे हैं।

यदि शैतान आपको बुरा नहीं बना सकता, तो वह आपको व्यस्त करने का प्रयास करेगा। इतना व्यस्त कि आप परमेश्वर, परिवार, कलीसिया और समाज के साथ सही ढंग से मिल भी नहीं पाएंगे। अपने जीवन को जांचें। क्या आप इतने व्यस्त हो गए हैं कि आप के पास परमेश्वर की दी हुई आशीषों का आनन्द उठाने का भी समय नहीं है? यदि ऐसा है, तो अपने परिवार और परमेश्वर का समय छीनने की बजाय बाकी कामों में से समय निकालें।

आज के लिए प्रार्थना: हे परमेश्वर, मुझे अपने समय, अपनी प्राथमिकताओं और अपनी उत्पादकता को जांचनें में सहायता करें। मैं ऐसी मोमबत्ती नहीं बनना चाहता जो दोनों सिरों पर जल रही है। मुझे अपने जीवन को आपके उद्देश्यों के अनुसार ढालने और व्यवस्थित करने के लिए एक योजना दें। हे प्रभु, आप जो आशीषें मुझे देते हैं उनका आनन्द उठाने में मेरी सहायता करें।

आज के लिए वचन: लूका 10:39–42 और मरियम नाम उस की एक बहिन थी; वह प्रभु के पांवों के पास बैठकर उसका वचन सुनती थी। पर मार्था सेवा करते करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी; हे प्रभु, क्या तुझे कुछ भी सोच नहीं कि मेरी बहिन ने मुझे सेवा करने के लिये अकेली ही छोड़ दिया है? सो उस से कह, कि मेरी सहायता करे। प्रभु ने उसे उत्तर दिया, मार्था, हे मार्था; तू बहुत बातों के लिये चिन्ता करती और घबराती है। परन्तु एक बात अवश्य है, और उस उत्तम भाग को मरियम ने चुन लिया है: जो उस से छीना न जाएगा।

भजन 46:10 चुप हो जाओ, और जान लो, कि मैं ही परमेश्वर हूँ ...

प्रार्थना नमक नहीं है जिसे हम अपनी योजना पर छिड़क लेते हैं ताकि उसे परमेश्वर का स्वाद दिया जा सके ... बल्कि प्रार्थना वह प्रमुख अवयव है जिसके द्वारा हमें अपने जीवन का असली अर्थ पता चलता है

प्रार्थना केवल अपने प्रयासों पर परमेश्वर की आशीषें प्राप्त करने का समय निकालने से बढ़कर, वार्तालाप का एक तरीका है जिसका हम आनन्द उठाते हैं और जो परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्ध का मार्ग खोलता है। प्रार्थना वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर हमारे हृदयों और हमारे मनों में अपने संदेश भेजते हैं। जब हम प्रार्थना करते हैं, परमेश्वर हमारी आत्माओं से बात करते हैं और हमें पता भी नहीं चलता और हमें नई दिशाएं और प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं।

प्रार्थना नमक नहीं है जिसे हम अपनी योजना पर छिड़क लेते हैं ताकि उसे परमेश्वर का स्वाद दिया जा सके ... बल्कि प्रार्थना वह प्रमुख अवयव है जिसके द्वारा हमें अपने जीवन का असली अर्थ पता चलता है। जो हम कर रहे हैं उस पर परमेश्वर की आशीषें मांगने की बजाय हमें आवश्यक समय बिता कर यह पता करना चाहिए कि परमेश्वर क्या कर रहे हैं और उसी प्रयासों में अपने आप को लगा लेना चाहिए।

आज के लिए प्रार्थना: हे पिता, मैं जानता हूँ कि आपके पास मेरे जीवन के लिए सुनिश्चित इच्छा, उद्देश्य और योजना है। मैं आपसे मांगता हूँ कि मुझसे बात करें और उस योजना को मुझ पर स्पष्ट करें। मैं आपके साथ ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहता कि आपके और मेरे सम्बन्ध में मैं सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण या बुद्धिमान व्यक्ति हूँ। मुझे अपनी इच्छा दर्शाएं। मैं जानता हूँ कि यह पहले से ही आशीषित है।

आज के लिए वचन: नीतिवचन 3:5–8 तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वे तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना। ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी।

जीवन की चार परीक्षाएं: नम्बर एक: घाटी परीक्षा

घाटियां जीवन के निचले क्षेत्र हैं। कभी न कभी हम सभी अपने आप को इन निचले स्थानों में पाते हैं, तनाव के, पीछे हटने के, असफलता की भावनाओं में पड़ने के और सबकुछ छोड़ देने के प्रलोभन में पाते हैं। कुछ निर्णय लेने के लिए घाटियां अच्छा स्थान नहीं हैं। हमारा ध्यान केवल हमारे चारों ओर की वस्तुओं तक ही सिमट कर रह जाता है, और इस कारण हमारा दर्शन भी सीमित हो जाता है।

इस बात से डर न जाएं कि आप इन घाटियों के क्षणों में ही पड़े रहेंगे। उन निचली भावनाओं से बाहर निकलें और उन निचली भावनाओं के कारण अपने प्रयास रोक देने के प्रलोभन पर विजयी हो जाएं। याद रखें, परमेश्वर आपके साथ है और उन घाटियों में जो कुछ भी परिवर्तित होने की आवश्यकता है उसमें वह आपकी सहायता करेंगे।

आज के लिए प्रार्थना: हे प्रभु, मेरे जीवन के दौरान आने वाली घाटी परीक्षाओं में दृढ़ और मजबूत बने रहने में मेरी सहायता करें। मैं जानता हूँ कि मैं आप पर भरोसा कर सकता हूँ और यह भी कि आप मेरे बदले में अपने आप को मजबूत प्रमाणित करने की अपनी इच्छा और चरित्र में सच्चे हैं। मेरी सहायता करें कि मैं भी दूसरों के साथ खड़ा हो सकूँ और जब वे अपनी घाटी में से गुजरते हैं तो उन्हें प्रोत्साहित कर सकूँ।

आज के लिए वचन: भजन 23:4–6 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोंटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है। तू मेरे सतानेवालों के साम्हने मेरे लिये मेज बिछाता है; तू ने मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है। निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।

edit copy

जीवन की चार परीक्षाएंः नम्बर दोः पहाड़ की चोटी परीक्षा

जीवन के पहाड़ में, जब हम सितारों को लगभग छू ही लेते हैं, जब ताज़ा हवा के झोंके उत्साह लाते हैं और घाटी के दिन अब पीछे छूट गए हैं, हमारा दर्शन हमें बहुत महान प्रतीत हो सकता है। यही वे समय हैं जब हमें यह याद रखने की आवश्यकता है कि जो भी नया निर्णय हम इस पहाड़ पर लेते हैं वह हमें और आगे बढ़ने के असवर देगा। हम यहां से आगे भी बढ़ सकते हैं, पहाड़ से नीचे एक नई दिशा की ओर जा सकते हैं या जीवन की एक नई घाटी के संघर्ष में भी जा सकते हैं।

हम पहाड़ पर तरोताज़ा होने के लिए, अपनी पिछली उपलब्धियों को देखने के लिए और नई चुनौतियों को गले लगाने के लिए आते हैं। पहाड़ की परीक्षा यह हैः क्या आप एक नई चुनौती को गले लगाएंगे और एक नई घाटी को देखने का जोखिम उठाएंगे या आप यहां सबकुछ छोड़ देंगे?

<u>*आज के लिए प्रार्थनाः*</u> हे पिता, आपके साथ मेरे सम्बन्ध में मुझे दृढ़ और तीव्र बने रहने में सहायता करें, विशेषकर मेरे जीवन के पहाड़ के अनुभव के दौरान। मुझे ऐसा ह्रदय दें जो हर समय आप ही की ओर लगा रहे। मुझे ताज़ा अभिषेक और जीवन में आगे बढ़ने के लिए आवश्यक हियाव दें।

<u>*आज के लिए वचनः*</u> यहोशू 14:10–12 और अब देख, जब से यहोवा ने मूसा से यह वचन कहा था तब से पैतालीस वर्ष हो चुके हैं, जिन में इस्त्राएली जंगल में घूमते फिरते रहे; उन में यहोवा ने अपने कहने के अनुसार मुझे जीवित रखा है; और अब मैं पचासी वर्ष का हूँ। जितना बल मूसा के भेजने के दिन मुझ में था उतना बल अभी तक मुझ में है; युद्ध करने, वा भीतर बाहर आने जाने के लिये जितनी उस समय मुझ मे सामर्थ्य थी उतनी ही अब भी मुझ में सामर्थ्य है। इसलिये अब वह पहाड़ी मुझे दे जिसकी चर्चा यहोवा ने उस दिन की थी; तू ने तो उस दिन सुना होगा कि उस में अनाकवंशी रहते हैं, और बड़े बड़े गढ़वाले नगर भी हैं; परन्तु क्या जाने सम्भव है कि यहोवा मेरे संग रहे, और उसके कहने के अनुसार मैं उन्हें उनके देश से निकाल दूं।

फिलिप्पियों 4:13 जो मुझे सामर्थ देता है, उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूँ।

जीवन की चार परीक्षाएंः नम्बर तीनः प्रतीक्षा करने की परीक्षा

किसान भूमि में बीज बो कर उसे ढक देता है। अगले मौसम में वह भूमि को जोतता है और छोटे पौधे को सम्भालता है और अपने परिश्रम के फल के उगने की प्रतीक्षा बड़े धीरज के साथ करता है। अनुभव के द्वारा, किसान ने सीख लिया है कि उसे प्रतीक्षा तो करनी ही पड़ेगी और शायद कुछ दिनों तक तो कोई प्रमाण दिखाई भी न दे।

यह सिद्धांत हमारे जीवन के अन्य कई क्षेत्रों में भी सत्य है। हम अपना समय, अपनी प्रार्थना, अपने प्रयत्न बोते हैं और कभी कभी हम पर यह सोचने का प्रलोभन आता है कि वह सबकुछ व्यर्थ था। यह प्रतीक्षा की परख है। मसीही होने के नाते हम जानते हैं कि परमेश्वर हमारे अधीर होने के द्वारा कार्य नहीं करता बल्कि अपने समय के अनुसार कार्य करता है। जब आपने सबकुछ पूरा कर लिया है तो प्रभु पर भरोसा रखें और प्रभु की प्रतीक्षा करें ... वह हमेशा समय पर आता है।

<u>*आज के लिए प्रार्थनाः*</u> हे पिता, जब मुझे धीरज का आवश्यकता हो तो मेरी सहायता करें। धीरज की परीक्षा में सफल होने के लिए मुझे अपना विशेष अनुग्रह प्रदान करें। मेरे साथ धीरज धरने के लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद।

<u>*आज के लिए वचनः*</u> याकूब 5:7 सो हे भाइयो, प्रभु के आगमन तक धीरज धरो, देखो, गृहस्थ पृथ्वी के बहुमूल्य फल की आशा रखता हुआ प्रथम और अंतिम वर्षा होने तक धीरज धरता है।

भजन 27:14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध और तेरा हृदय दृढ़ रहे; हां, यहोवा ही की बाट जोहता रह!

जीवन की चार परीक्षाएंः नम्बर चारः पूरा हो जाने की परीक्षा

काम आरम्भ होते हैं और काम समाप्त हो जाते हैं। यह जीवन की निश्चितता है। उदाहरण के तौर पर, एक नौजवान लड़के को लें जिसकी मंगनी हो चुकी है। जिस दिन वह अपनी दुल्हन के साथ नई वाचा बान्धेगा, उसका कुँवारा जीवन समाप्त हो जाएगा। यह वह अध्याय है जो पूरा हो गया है, और, मेरी प्रतीति करें, एक परीक्षा आएगी।

हमारे जीवन में ऐसे समय आएंगे जब हम जिन कामों में व्यस्त थे, वे अतीत बन जाएंगे और हमें उन पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं रहेगी। यह समय सेवानिवृत्ति, स्थानांतरण या जीवनसाथी की मृत्यु के द्वारा भी आ सकता है। इन समयों में, आवश्यक है कि हम जीवन की सम्पूर्णता को स्वीकार करें, अतीत को उचित दृष्टिकोण के साथ देखें, भविष्य को गले लगाएं और अगली परीक्षा के लिए तैयार हो जाएं, जो निश्चय ही आएगी।

आज के लिए प्रार्थनाः हे पिता, मुझे अपने जीवन की दौड़ विश्वास के साथ दौड़ने में सहायता करें। जब एक काम पूरा हो जाता है और एक नया दिन या नई बुलाहट हमारे सामने आती है, साहस के साथ इन अनजान बातों को गले लगाने में मेरी सहायता करें यह जानते हुए कि मेरे प्रत्येक कदम पर आप मेरे साथ हैं।

आज के लिए वचनः फिलिप्पियों 3:13—14 हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं है कि मैं पकड़ चुका हूँ; परन्तु केवल यह एक काम करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूलकर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूँ, ताकि वह इनाम पाऊँ जिसके लिए परमेश्वर ने मसीह यीशु में मुझे ऊपर बुलाया है।

यशायाह 43:18—19 अब बीती हुई घटनाओं का स्मरण मत करो, न प्राचीनकाल की बातों पर मन लगाओ। देखो, मैं एक नई बात करता हूँ; वह अभी प्रगट होगी, क्या तुम उस से अनजान रहोगे?

नियंत्रण न छोड़ने की भावना के कारण हम सीमित हो जाते हैं

पश्चिमी देशों में अधिकतर लोग स्वाधीन व्यवहार के साथ पाले—पोसे जाते हैं। किसी दूसरे की आधीनता में आना या किसी दूसरे के विचार का समर्थन करना उनके लिए बहुत कठिन है। यहां तक कि बड़ी चुनौती तो तब उन्हें मिलती है जब उन्हें ऐसे काम में सम्मिलित होना पड़ता है जिस पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है। सेना में भर्ती होने से लेकर सामाजिक भलाई के कार्य में सम्मिलित होने तक बहुत से लोग उनमें शामिल होने से पहले सबकुछ नियंत्रण करना चाहते हैं।

यह बात उन लोगों के लिए भी विशेष चुनौती लाती है जो मसीह के प्रति समर्पित हैं। वे उद्धारकर्ता के रूप में तो उसे तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं परन्तु प्रभु के रूप में स्वीकार करने से डरते हैं। तथापि, आपके जीवन के सिंहासन पर एक से अधिक व्यक्तियों के बैठने का स्थान नहीं है। क्या यह आप है या प्रभु है?

आज के लिए प्रार्थनाः हे पिता, मेरी सहायता करें कि मैं अपने जीवन का नियंत्रण छोड़ सकूँ और अपने निर्णय प्रभु यीशु, अपने प्रभु और मुक्तिदाता, के हाथों में सौंप सकूँ। मुझे अपना मार्ग सिखाएं और मैं आपका अनुसरण करूँगा।

आज के लिए वचनः प्रेरितों के काम 2:36 सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चय जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।

यूहन्ना 14:15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो तो मेरी आज्ञाओं का मानोंगे।

याकूब 4:7 इसलिए परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

edit copy